DOIs:10.2018/SS/202505012 --:-- Research Paper / Article / Review

घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टीकोण के संबंध में व्यस्कों की आधुनिकता एवं स्थानीयता का अध्ययन

मोहम्मद कमाल अली
शोधार्थी,
मनोविज्ञान विभाग,
जे एस हिन्दू (पी जी) कॉलेज, अमरोहा
Email – kamaalalizaidi@gmail.com

डॉ सचिन कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग,
जे एस हिन्दू (पी जी) कॉलेज, अमरोहा
Email – spvishvkarma1@gmail.com

सार: आधुनिक समय में भी घरेलू हिंसा विभिन्न रूपों में विद्यमान एक गंभीर विडम्बना बनी हुई है जो समाज को अंदर से खोखला बना रही है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि किस प्रकार आधुनिकता वयस्कों की सोच और दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं, विशेषकर घरेलू हिंसा जैसे संवेदनशील सामाजिक मुद्दे पर। प्रस्तुत शोध में सहसंबंधात्मक विधि को उपयोग में लाया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश के बरेली जिले के कुल 100 वयस्कों (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) को स्तरीकृत याद्दच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया, जिनकी औसत आयु 23.4 वर्ष थी। आंकड़ों के संकलन हेतु केरावाला और कलियथ (1989) की व्यक्तिगत आधुनिकता मापनी का हिन्दी अनुकूलन करने के पश्चात एवं सोनी और बेहमानी (2018) की घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण मापनी का उपयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण में पियर्सन गुणन-आघुर्ण (प्रोडक्ट मोमेंट) सह-संबंध एवं टी-परीक्षण की गणना की गयी। परिणामों में पाया कि वयस्कों की आधुनिकता और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के मध्य नकारात्मक सहसंबंध है ($r=-0.549$, $p<.01$)। शहरी वयस्कों में अधिक आधुनिकता और घरेलू हिंसा के प्रति अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण देखा गया, जबकि ग्रामीण वयस्कों में यह प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम थी। टी-परीक्षण द्वारा यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया ($t=3.252$, $p< 0.01$; $t=7.926$, $p<0.01$)। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिकता घरेलू हिंसा जैसे सामाजिक कुरीतियों की अस्वीकृति में सहायक सिद्ध होती है। इस प्रकार, सामाजिक विकास और नीति निर्माण में आधुनिकता को बढ़ावा देने वाली शिक्षा एवं जागरूकता आवश्यक है ।

मुख्य शब्द: *आधुनिकता, घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण, वयस्क* ।

1. प्रस्तावना

घरेलू हिंसा आधुनिक युग की कोई नई अवधारणा नहीं है; यह प्राचीन काल से ही विभिन्न समाजों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। यद्यपि 20वीं सदी में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, फिर भी 21वीं सदी में भी महिलाएं घरेलू हिंसा जैसी अमानवीय समस्याओं का सामना कर रही हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2022 में महिलाओं के विरुद्ध प्राप्त 30,900 शिकायतों में से 6,900 मामले घरेलू हिंसा से संबंधित थे। यह आंकड़ा दर्शाता है कि 2021 की तुलना में बलात्कार, दहेज उत्पीड़न और घरेलू हिंसा की शिकायतों में वृद्धि हुई है। महिलाओं के साथ-साथ पुरुषों के विरुद्ध भी मानसिक एवं शारीरिक हिंसा के उदाहरण सामने आए हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2019-21) के अनुसार, 18 से 49 वर्ष की आयु वर्ग की 29.3% विवाहित महिलाओं ने किसी न किसी रूप में घरेलू हिंसा का अनुभव किया। घरेलू हिंसा न केवल एक आपराधिक कृत्य है, बल्कि यह समाज के समग्र विकास, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण और पारिवारिक स्थायित्व के लिए एक गंभीर अवरोधक भी है। अतः घरेलू हिंसा की समस्या से निपटने हेतु एक बहु-विषयक दृष्टिकोण आवश्यक है, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं मानसिक स्वास्थ्य नीतियों को प्रभावी रूप से विकसित किया जा सके (सरकार, 2010)।

घरेलू हिंसा

घरेलू हिंसा केवल एक व्यक्तिगत या पारिवारिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, मानसिक और आर्थिक स्वास्थ्य से जुड़ा एक गंभीर मुद्दा है। यह वह हिंसा है जो किसी घरेलू या पारिवारिक संबंध के भीतर घटित होती है, विशेषकर पति-पत्नी, माता-

पिता-बच्चों, या अन्य पारिवारिक सदस्यों के बीच। यह हिंसा शारीरिक, मौखिक, भावनात्मक, आर्थिक, यौन या धार्मिक दुर्व्यवहार के रूप में सामने आ सकती है। घरेलू हिंसा कभी-कभी हल्की जबरदस्ती से शुरू होकर गला घोंटना, पीटना, जलाना, तेज़ाब फेंकना, और यहां तक कि हत्या जैसी चरम स्थितियों तक पहुंच सकती है। घरेलू हिंसा का प्रभाव केवल पीड़ित तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह पूरे परिवार और समुदाय पर गहरा असर डालता है। मानसिक तनाव, आत्म-सम्मान में गिरावट, सामाजिक अलगाव और दीर्घकालिक अवसाद जैसे परिणाम आमतौर पर देखे जाते हैं। अतः घरेलू हिंसा को केवल एक निजी मामला मानना गलत है; यह एक सार्वजनिक और सामाजिक स्वास्थ्य समस्या है, जिसका शिक्षा, जागरूकता और वैचारिक परिवर्तन के माध्यम से ही प्रभावी ढंग से समाधान किया जा सकता है।

घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण

ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो घरेलू हिंसा को अक्सर नजरअंदाज किया जाता रहा है। पीड़ित, हिंसा करने वाला, परिवार और समाज सभी के दृष्टिकोण में विविधता देखने को मिलती है, जो स्वयं हिंसा के जारी रहने का एक कारण बनती है। किसी व्यक्ति का घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण उसके सांस्कृतिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत अनुभवों से आकार लेता है और यह दृष्टिकोण इस बात को प्रभावित करता है कि वह हिंसा को स्वीकार करता है या अस्वीकार। अध्ययनों से ज्ञात होता है कि जो महिलाएं पति द्वारा की गई पिटाई को उचित मानती हैं, उनके साथ घरेलू हिंसा होने की संभावना उन महिलाओं की तुलना में लगभग दोगुनी होती है जो इस हिंसा का विरोधात्मक दृष्टिकोण रखती हैं (बेगम एवं अन्य, 2015)। इस प्रकार, सकारात्मक (यानी हिंसा-समर्थक) दृष्टिकोण घरेलू हिंसा की घटनाओं को बढ़ावा दे सकता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण हिंसा-विरोधी सामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करता है।

मनोविज्ञान में दृष्टिकोण को एक व्यक्ति की उस समग्र मानसिक अवस्था के रूप में देखा जाता है जो किसी विषय के प्रति उसकी भावनाओं, विश्वासों और प्रवृत्तियों को दर्शाता है। घरेलू हिंसा के संदर्भ में दृष्टिकोण का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यवहार और प्रतिक्रिया को समझने में सहायक होता है। इसके अलावा, सामाजिक-आर्थिक और वैयक्तिक कारक जैसे आयु, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि भी दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

आधुनिकता

इसी संदर्भ में, *आधुनिकीकरण* का प्रभाव भी अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है। आधुनिकीकरण का तात्पर्य "पूर्व-आधुनिक" या "पारंपरिक" समाज से "आधुनिक" समाज की ओर प्रगतिशील परिवर्तन से है। यह सिद्धांत मानते हैं कि किसी राष्ट्र के आंतरिक कारकों के माध्यम से पारंपरिक समाजों को उसी प्रकार विकसित किया जा सकता है जैसे विकसित राष्ट्रों (पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका) ने किया है। डेनियल लर्नर (1958) जैसे विद्वानों ने आधुनिकता को पश्चिमीकरण के समकक्ष माना है। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण को तीन प्रमुख अर्थों में समझा जाता है:

1. पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के आंतरिक सामाजिक-आर्थिक विकास के रूप में,
2. ऐसी प्रक्रिया के रूप में जिसके तहत अविकसित राष्ट्र उन्हीं रास्तों पर अग्रसर होते हैं,
3. और एक विकासात्मक चरण के रूप में जिसमें समाज अधिक जटिल, गतिशील और उदारवादी बनता है।

आधुनिकीकरण सिद्धांत उन सामाजिक चरों की पहचान करने का प्रयास करता है जो सामाजिक प्रगति और विकास में सहायक होते हैं। यह समाज की संरचना, मूल्य प्रणाली और व्यवहार में आने वाले परिवर्तनों को समझने में मार्गदर्शक बनता है। यह अध्ययन जांचता है कि आधुनिकता किस हद तक वयस्कों के घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। विशेष रूप से यह स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भ में इन कारकों के अंतः संबंध को समझने का प्रयास करेगा, ताकि घरेलू हिंसा की रोकथाम हेतु वैचारिक और व्यवहारिक रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

2. साहित्य सर्वेक्षण

यजिसी, बटमाज एवं आकटेन, 2022 के इस अध्ययन का उद्देश्य तुर्की समाज में वयस्कों के मध्य घरेलू हिंसा जागरुकता और हिंसा के प्रति दृष्टिकोण को समझना था। यह वर्णनात्मक और अनुप्रस्थ काट अध्ययन 15 सितंबर, 2021 और 15 नवंबर, 2021 के बीच ऑनलाइन आयोजित किया गया था और इसमें 353 प्रतिभागी शामिल थे। आंकड़े स्नोबॉल प्रतिचयन विधि से गूगल फॉर्म द्वारा सामाजिक-जनसांख्यिकीय वर्णनात्मक सूचना प्रपत्र, घरेलू हिंसा जागरुकता मापनी और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण मापनी का उपयोग करके एकत्र किये गये। आंकडों के विश्लेषण के लिए संख्या, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, टी-परीक्षण, प्रसरण विश्लेषण, पोस्ट हॉक विश्लेषण, कोहेन का डी और एटा वर्ग (η 2) गुणांक, और सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग किया गया। अधिकांश प्रतिभागी महिलाएं (79.0%) थीं, जिनकी औसत आयु 30.5±13.11 वर्ष थी। सभी प्रतिभागियों में से, 56.9% ने कहा कि उन्होंने घरेलू हिंसा देखी है, 22.7% ने कहा कि उन्होंने महिलाओं के खिलाफ हिंसा का अनुभव किया है, 8.2% ने कहा कि उन्होंने घरेलू हिंसा की। जबकि औसत घरेलू हिंसा जागरुकता मापनी की गणना 41.09±3.98 के रूप में की गई थी, घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण मापनी के औसत प्राप्तांक की गणना 20.18±7.82 के रूप में की गई। घरेलू हिंसा जागरुकता के प्राप्तांक शिक्षा स्तर के आधार पर भिन्न थे। घरेलू हिंसा के प्रति महिलाओं का दृष्टिकोर्ण (19.10) पुरुषों (24.26) की तुलना में कम था। घरेलू हिंसा के प्रति

प्रतिभागियों का दृष्टिकोण पारिवारिक प्रकार, शिक्षा स्तर और व्यवसाय के अनुसार काफी भिन्न था। घरेलू हिंसा के प्रति जागरुकता और दृष्टिकोण के बीच सार्थक सकारात्मक संबंध पाया गया। निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि प्रतिभागियों में घरेलू हिंसा के प्रति जागरुकता की उच्च भावना और हिंसा के प्रति नकारात्मक रवैया था। घरेलू हिंसा के बारे में उनकी जागरुकता शिक्षा स्तर से प्रभावित थी, जबकि घरेलू हिंसा के प्रति उनका दृष्टिकोण लिंग, परिवार के प्रकार, शिक्षा स्तर और व्यवसाय से प्रभावित था।

चावरा, 2023 ने यह अध्ययन घरेलू हिंसा पर आधुनिकीकरण के प्रभाव पर प्रकाश डालने के उद्देश्य के साथ किया। अध्ययन में सोनी और बेहमनी, 2018 की घरेलू हिंसा के प्रति द्रष्टिकोण मापनी एवं सिंह, त्रिपाठी और लाल, 1979 की आधुनिकीकरण मापनी को 480 महिलाओं के एक न्यादर्श पर प्रशासित किया गया। आईबीएम-एसपीएसएस 20 का उपयोग करते हुए, आंकड़ो का विश्लेषण किया गया। द्विचर सहसंबंध और प्रतिगमन विश्लेषण की गढ़ना की गयी। आधुनिकीकरण और घरेलू हिंसा के बीच उच्च सहसंबंध पाया गया तथा प्रतिगमन विश्लेषण ने घरेलू हिंसा के पूर्वानुमानकर्ताओं को दर्शाया। महिलाओं की शिक्षा और स्थिति से महिलाओं के दमन और महिलाओं द्वारा घरेलू हिंसा के औचित्य का अनुमान लगाया जा सकता है। सामाजिक-धार्मिक विश्वास और शिक्षा से पति की श्रेष्ठता का अनुमान लगाया जा सकता है। शादी की उम्र घरेलू हिंसा के लिए महिलाओं के औचित्य का अनुमान लगा सकती है।

गोलरिज और मिनर, 2021 ने अंतरंग साथी हिंसा के प्रति धर्म और महिलाओं के दृष्टिकोण के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए मिस्र के 2008 जनसांख्यिकी और स्वास्थ्य सर्वेक्षण का उपयोग किया। अध्ययन में ये जानने का प्रयास किया गया कि क्या आधुनिकीकरण, जैसा कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने या शहरी क्षेत्र में रहने से प्रभावित होता है, महिलाओं का उनके पति द्वारा पीटने के द्रष्टिकोण के विभिन्न वर्गों का विश्लेषण का उपयोग करते हुए, और धर्म, शिक्षा और शहरीता के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग किया गया। अध्ययन में मुस्लिम होने और पत्नी की पिटाई को उचित ठहराने के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं मिला। प्राप्त आंकड़ो के अनुसार न तो शिक्षा और न ही शहरीता इनके बीच मध्यस्थता निर्धारित करती है।

राशिद एवं वैद्या, 2021 ने यह अध्ययन जिला बारामूला में आधुनिकीकरण के प्रति पुरुष और महिला छात्रों के दृष्टिकोण की जांच और तुलना करने के प्रयास से किया। अध्ययन के अनुसार आधुनिकीकरण के सिद्धांत का उपयोग सामाजिक संरचनाओं के भीतर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को समझाने के लिए किया जाता है। आधुनिकीकरण का तात्पर्य 'पूर्व-आधुनिक' से 'आधुनिक' समाज में प्रगतिशील परिवर्तन के एक मॉडल से है। इतिहासकार आधुनिकीकरण को शहरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रियाओं और शिक्षा के प्रसार से जोड़ते हैं। केंडल (2007) के अनुसार ''शहरीकरण के साथ-साथ आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण की तीव्र प्रक्रिया भी हुई।'' समाजशास्त्रीय आलोचनात्मक सिद्धांत में, आधुनिकीकरण को युक्तिकरण की एक व्यापक प्रक्रिया के रूप में संदर्भित किया जाता है। जब किसी समाज में आधुनिकीकरण बढ़ता है, तो समाज की मूलभूत इकाई के रूप में समुदाय में स्थान ले लेते हैं।

अक्तास, 2016 के अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं के विरुद्ध होने वाली घरेलू हिंसा के प्रति विश्वविद्यालय के छात्रों के दृष्टिकोण को निर्धारित करना था। यह अध्ययन अनुप्रस्थ-काट विधि से तुर्की के एक विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ नर्सिंग और स्कूल ऑफ फिजिकल थेरेपी एंड रिहैबिलिटेशन में भाग लेने वाले छात्रों पर आयोजित किया गया। यह अध्ययन फरवरी 2015 और मई 2015 के बीच किया गया। अध्ययन में 415 स्वयंसेवी छात्रों को सम्मालित किया गया। व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण मापनी का उपयोग करके आंकड़ों का संकलन किया गया था। आवृत्ति, माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्र टी-परीक्षण और प्रसरण विश्लेषण का उपयोग करके आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। घरेलू हिंसा के प्रति विश्वविद्यालय के छात्रों के दृष्टिकोण का औसत प्राप्तांक 23.13 ± 6.66 था और वे लिंग से प्रभावित थे। घरेलू हिंसा के प्रति विश्वविद्यालय के छात्रों के दृष्टिकोण का औसत प्राप्तांक कम पाया गया और घरेलू हिंसा के प्रति उनका दृष्टिकोण प्रतिकूल पाया गया। महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा में रुचि रखने वाले विश्वविद्यालय के छात्रों लिए सूचना, मार्गदर्शन, उत्तेजना और रोकथाम से युक्त शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए जाने की आवश्यकता है।

जकार, जकार और क्रेमर, 2013 ने पाकिस्तान में अंतरंग साथी हिंसा के प्रति पुरुषों की मान्यताओं और दृष्टिकोण का अध्ययन किया। घरेलू हिंसा के प्रति पुरुषों की मान्यताएं और दृष्टिकोण, लिंग एवं समाजीकरण जहां महिलाओ की भूमिका विनम्र और नम्र के रूप में सामने आने वाली जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया से आकार लेते हैं। लाहौर और सियालकोट में आयोजित आठ गहन साक्षात्कारों और चार समूह चर्चाओं पर आधारित, यह अध्ययन ये प्रस्तुत करता है कि पुरुष पाकिस्तानी समाज के संदर्भ में साथी हिंसा को कैसे समझते हैं और उसे उचित ठहराते हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि पुरुषों के बीच स्थापित ''आदर्श पत्नी'' की अवधारणा ''विनम्र'' की धारणा में उचित बैठती है, जो नियंत्रण, अनुशासन और हिंसक दंड के अधीन हैं।

वैलाच, वेनग्राम और एविटन, 2010 ने इजराइल में इथियोपिया के यहूदियों द्वारा घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण पर संस्कृतीकरण के प्रभाव की खोज की। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि इजराइल में रहने वाले 31 इथियोपियों ने इजराइल में जन्मे 62 यहूदियों की तुलना में घरेलू हिंसा के प्रति अधिक उदार दृष्टिकोण रखा, इन परिणामों ने इस परिकल्पना को सिद्ध किया कि संस्कृति, घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। इसके अलावा, इजराइल में पैदा हुए इथियोपियाईयों का दृष्टिकोण इजराइल में जन्मे यहूदियों के समीप था, जो इथियोपियाई मूल के नहीं थे।

अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता

प्रस्तुत अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि स्थानीय सामाजिक संदर्भ में वयस्कों की आधुनिकता की अवधारणाएँ घरेलू हिंसा के प्रति उनके दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। यह शोध इस महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या की गहराई से अध्ययन कर, घरेलू हिंसा की प्रभावी रोकथाम के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष नीति निर्माताओं को घरेलू हिंसा के निवारण, पीड़ितों की सहायता और सामाजिक कल्याण की दिशा में उपयुक्त रणनीतियाँ बनाने में सहायक होंगे। यह अध्ययन घरेलू हिंसा और आधुनिक सोच के बीच संबंधों की पहचान करने में सहायक होगा, जो भावी हस्तक्षेपों, जन-जागरूकता अभियानों और शैक्षिक पाठ्यक्रमों के निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध ग्रामीण और शहरी परिवेश में रहने वाले वयस्कों के दृष्टिकोणों की तुलना के माध्यम से आधुनिकता के प्रभाव को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगा। घरेलू हिंसा के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयामों की समग्र समझ विकसित करने की दिशा में यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण योगदान देगा।

उद्देश्य

1. व्यस्कों में घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण और आधुनिकता के वितरण का अध्ययन करना।
2. आधुनिकता और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के बीच सम्बन्ध की सार्थकता का अध्ययन करना।
3. घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण और आधुनिकता के सम्बन्ध में स्थानीयता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

1. आधुनिकता और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।
2. घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण और आधुनिकता के सम्बन्ध में ग्रामीणं एवं शहरी व्यस्कों में कोई सार्थक भिन्नता नही है।

3. कार्यप्रणाली

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के संबंध में व्यस्कों की आधुनिकता के अध्ययन के लिए सहसम्बन्धात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में बरेली जिले के समस्त शहरी एवं ग्रामीण वयस्क सम्मिलित हैं। अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार 100 रखा गया है जिसमें बरेली जिले के 50 शहरी एवं 50 ग्रामीण व्यस्कों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया जिसके लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि को उपयोग में लाया गया। प्रतिदर्श का चयन बरेली जिले विभिन्न शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में से किया गया।

चर

स्वतंत्र चर – आधुनिकता एवं स्थानीयता।
आश्रित चर - घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण।

अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन के लिए निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया है-

1. घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण मापनी - इस अध्ययन में वयस्कों के घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण को मापने के लिए सोनी और बेहमानी (2018) द्वारा विकसित 16 वाक्यीय मापनी का उपयोग किया गया। यह एक छः बिंदु लिकर्ट स्केल आधारित स्व-मूल्यांकन मापनी है, जिसमें उत्तरदाता "पूरी तरह असहमत" से "पूरी तरह सहमत" तक अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। मापनी के उच्च प्राप्तांक घरेलू हिंसा के प्रति सहायक दृष्टिकोण को, जबकि निम्न प्राप्तांक असहायता या विरोध को दर्शाते हैं। इसे व्यक्तिगत रूप से या छोटे समूहों में लगभग 10 मिनट में पूरा किया जा सकता है। यह मापनी तीन आयामों घरेलू हिंसा का औचित्य, महिलाओं का दमन एवं पति की श्रेष्ठता पर आधारित है। विश्वसनीयता की पुष्टि क्रोनबैक अल्फा द्वारा की गई, जिसमें .74 से .81 तक के मान प्राप्त हुए, जो मापनी की आंतरिक संगतता को दर्शाते हैं। वैधता को आधुनिकता और अन्य मापन उपकरणों के साथ सहसंबंध स्थापित करके सिद्ध किया जिसमे मापनी के कुल प्राप्तांक, आधुनिकता मापनी के सामाजिक-धार्मिक -.35, विवाह -.41, शिक्षा -.48, और महिलाओं की स्थिति -.50 के साथ सार्थक रूप से सहसंबंधित पाए गए।

2. व्यक्तिगत आधुनिकता मापनी - यह मापनी केरावाला और कलियथ (1989) द्वारा विकसित की गई थी, जिसका हिंदी संस्करण पर्यवेक्षक की निगरानी में अनुकूलित किया गया। मापनी में कुल 90 कथन हैं, जो आधुनिकता के 11 आयामों जैसे तर्कसंगतता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अनुकूलनशीलता, धर्मनिरपेक्षता, समतावाद आदि को मापते हैं। मापनी का फलांकन तीन-बिंदु पैमाने पर आधारित है, जहाँ उच्च स्कोर अधिक व्यक्तिगत आधुनिकता को दर्शाता है। विश्वसनीयता की पुष्टि विभिन्न विधियों से की गई, जैसे परीक्षण-पुनःपरीक्षण ($r = .88$), समानांतर रूप ($r = .66$), अर्धविच्छेद ($r = .87$), क्रोनबैक अल्फा ($\alpha = .83$), और गुट्टमैन सूत्र ($r = .73$)। सभी आयामों के बीच सहसंबंध .01 स्तर पर सार्थक पाए गए। वैधता तीन स्तरों पर स्थापित की गई विषय-वस्तु (विशेषज्ञ राय से), मानदंड वैधता (राजनीतिक अभिविन्यास से सहसंबंध $r = .33$), और समवर्ती वैधता (स्व-आकलन से $r = .54$), सभी .01 स्तर पर सार्थक पाए गए।

मापनी का अनुकूलन - कल्थिक और केरेवाला की व्यक्तिगत आधुनिकता मापनी के अंग्रेज़ी व हिंदी संस्करणों की तुलना की गई ताकि यह जांचा जा सके कि हिंदी अनुवाद समान रूप से प्रभावी है या नहीं। 30 प्रतिभागियों पर एक दिन के अंतराल में दोनों संस्करण लागू किए गए, जिससे स्मृति प्रभाव न्यूनतम रहा। दोनों संस्करणों के प्राप्तांकों में उच्च सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.87$) पाया गया, जो हिंदी अनुवाद की उपयुक्तता को दर्शाता है। इन निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि यह मापनी हिंदी भाषी आबादी में उपयोग के लिए विश्वसनीय और उपयुक्त है।

प्रक्रिया

सर्वप्रथम, लक्षित प्रतिभागियों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया गया और उन्हें शोध के उद्देश्य और प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। परीक्षण में भाग लेने के लिए उनकी सहमति प्राप्त की गई। इसके बाद, उन्हें एक आरामदायक वातावरण और उचित प्रकाश व्यवस्था में बैठाया गया। परीक्षण से संबंधित निर्देश स्पष्ट रूप से समझाए गए और उन्हें परीक्षण के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान की गई। परीक्षार्थियों को परीक्षण पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया, ताकि वे बिना किसी दबाव के अपने उत्तर दे सकें। परीक्षण पूरा होने के बाद, मापनी पुस्तिका की जांच की गई ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। अंत में, प्रतिभागियों का धन्यवाद कर उनसे विदा ली।

4. परिणाम

आंकड़ों के संकलन एवं फलांकन के पश्चात प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जिसमे मध्यमान, मानक विचल, टी परीक्षण एवं पियर्सन गुणन-आघुर्ण (प्रोडक्ट मोमेंट) सह-संबंध की गणना की गयी जिनका विवरण आगे प्रस्तुत है-

तालिका -1 आधुनिकता एवं घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण का सहसंबंध विश्लेषण

चर		N	r मान	p मान	निष्कर्ष
आधुनिकता	घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण	100	-0.549	$p < .01$	सार्थक नकारात्मक सहसंबंध

आधुनिकता एवं घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के मध्य पियर्सन गुणन आघूर्ण सहसंबंध (r) की गणना करने पर मान $r = -0.549$ प्राप्त हुआ जो दर्शाता है कि आधुनिकता और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के मध्य नकारात्मक सहसंबंध है। अर्थात जैसे-जैसे आधुनिकता बढ़ती है, घरेलू हिंसा की स्वीकृति में कमी आती है। तो हमारी शून्य परिकल्पना *"आधुनिकता और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।"* अस्वीकृत की जाती है।

तालिका -2 शहरी एवं ग्रामीण व्यस्कों के आधुनिकता एवं घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण की तुलना

चर	समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान
घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण	शहरी वयस्क	50	30.04	9.63	**7.926***
	ग्रामीण वयस्क	50	47.44	12.17	
आधुनिकता	शहरी वयस्क	50	128.90	15.05	**3.252***
	ग्रामीण वयस्क	50	119.52	13.77	

**.01 स्तर पर सार्थक।*

शहरी एवं ग्रामीण वयस्कों के घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण करने पर मध्यमान क्रमशः 30.04 (शहरी) एवं 47.44 (ग्रामीण) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि शहरी वयस्कों में घरेलू हिंसा के प्रति अधिक अस्वीकारात्मक दृष्टिकोण विद्यमान है। इसी प्रकार, आधुनिकता से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण करने पर मध्यमान क्रमशा: 128.90 तथा 119.52 पाया गया, जो यह संकेत देता है कि शहरी वयस्कों में ग्रामीण वयस्कों की तुलना में आधुनिक सोच अधिक पाई गयी। इन दोनों मानों के अंतर का टी-परीक्षण करने पर घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण हेतु टी-मान 7.926 तथा आधुनिकता हेतु टी-मान 3.252 प्राप्त हुआ, जो

सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर को दर्शाता है।अतः हमारी शून्य परिकल्पना, *"घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण एवं आधुनिकता के संदर्भ में शहरी और ग्रामीण वयस्कों में कोई सार्थक भिन्नता नहीं है"* अस्वीकृत की जाती है।

5. परिचर्चा

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह समझना था कि वयस्कों की आधुनिकता घरेलू हिंसा के प्रति उनके दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करती है, और क्या इस दृष्टिकोण में ग्रामीण तथा शहरी वयस्कों के बीच कोई अंतर है। इस अध्ययन के आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि आधुनिकता और घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण के मध्य एक सार्थक नकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अर्थात जैसे-जैसे व्यक्ति की आधुनिकता की प्रवृत्ति बढ़ती है, वैसे-वैसे वह घरेलू हिंसा को अस्वीकार्य मानने लगता है। यह निष्कर्ष चावरा, 2023 के शोध से मेल खाता है, जिन्होंने भी यह पाया कि आधुनिकीकरण और शिक्षा का स्तर बढ़ने से महिलाओं की घरेलू हिंसा के प्रति सहिष्णुता में कमी आती है। यजिची, बटमाज एवं आकटेन, 2022 के अध्ययन में भी यह पाया गया कि शिक्षा और सामाजिक स्थिति घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण पर संस्कृतीकरण का भी प्रभाव वैलाच,एवं अन्य, 2010 के अध्ययन से स्थापित हुआ। इस प्रकार, आधुनिकता एक ऐसा कारक बनकर उभरता है जो हिंसक व्यवहारों की अस्वीकृति में योगदान करता है। इसके अतिरिक्त, यह भी देखा गया कि कई बार सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और पारिवारिक माहौल व्यक्ति के दृष्टिकोण को ढालने में भूमिका निभाते हैं।

टी-परीक्षण के परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि शहरी वयस्कों की आधुनिकता का स्तर ग्रामीण वयस्कों की तुलना में अधिक था, और वे घरेलू हिंसा के प्रति अधिक नकारात्मक दृष्टिकोण रखते थे। इससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, और जीवनशैली में प्रगतिशील बदलाव घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। अक्तास, 2016 का अध्ययन भी इस बात का समर्थन करता है कि शिक्षा छात्रों के घरेलू हिंसा से संबन्धित दृष्टिकोण को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम गोलरिज और मिनर, 2021 की शोध के परिणामों से खंडित होते हैं जिसमे पाया गया कि न तो शिक्षा और न ही शहरीता, घरेलू हिंसा के प्रति दृष्टिकोर्ण की मध्यस्थता निर्धारित करती है। इस अध्ययन में शामिल ग्रामीण वयस्कों के दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक सहिष्णु पाए गए, जो यह इंगित करता है कि पारंपरिक सोच और सामाजिक संरचनाएं अब भी हिंसा के विरुद्ध स्पष्ट विरोध विकसित करने में बाधक हैं। जकार एवं अन्य, 2013 जैसे अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि पुरुषों की सामाजिक भूमिकाओं की पारंपरिक व्याख्याएं घरेलू हिंसा को 'नियंत्रण के उपकरण' के रूप में वैधता प्रदान करती हैं। वर्तमान अध्ययन भी इस निष्कर्ष का समर्थन करता है कि सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारक, विशेष रूप से शिक्षा और शहरीकरण, दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने में सहायक होते हैं।

अतः यह अध्ययन इस ओर संकेत करता है कि यदि समाज में आधुनिकता को बढ़ावा दिया जाए विशेष रूप से शिक्षा, समानता और तर्कशीलता जैसे मूल्यों के माध्यम से तो घरेलू हिंसा की स्वीकार्यता को कम किया जा सकता है। यह निष्कर्ष नीति-निर्माताओं, शिक्षा संस्थानों और सामाजिक संगठनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये परिवर्तनशील दृष्टिकोणों को समझकर प्रभावी हस्तक्षेप योजनाएं तैयार करने में सहायक हो सकते हैं।

6. निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वयस्कों की आधुनिकता घरेलू हिंसा के प्रति उनके दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। जिन प्रतिभागियों में आधुनिकता का स्तर अधिक था, उन्होंने घरेलू हिंसा के विरुद्ध अधिक अस्वीकारात्मक और विरोधी दृष्टिकोण प्रदर्शित किया। इसके विपरीत, जिन प्रतिभागियों का आधुनिकता स्तर निम्न था विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में वे घरेलू हिंसा को अपेक्षाकृत अधिक स्वीकार्य मानते पाए गए। शहरी और ग्रामीण वयस्कों के दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से स्पष्ट अंतर पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक परिवेश, शिक्षा, और जीवनशैली जैसे कारक व्यक्ति के व्यवहार और सोच को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि आधुनिकता जैसे कारक घरेलू हिंसा की सामाजिक स्वीकृति को प्रभावित कर सकते हैं और समाज में परिवर्तन की दिशा में एक सशक्त कारक बन सकते हैं।

सुझाव

1. ग्रामीण क्षेत्रों और कम-आधुनिक सोच वाले समुदायों में समानता, अधिकारों और महिला सशक्तिकरण पर आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
2. घरेलू हिंसा के विरुद्ध स्थानीय भाषा में जन-जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएं, ताकि लोगों की सोच में परिवर्तन लाया जा सके।
3. नीति-निर्माताओं को चाहिए कि वे ऐसी योजनाएं तैयार करें जिनसे आधुनिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिले और पारंपरिक हिंसक सोच को चुनौती दी जा सके।
4. ग्रामीण समाज में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं और शिक्षकों को आधुनिक सोच से जोड़कर, एक मूल्य आधारित संवाद की प्रक्रिया शुरू की जाए।

5. घरों में खुला संवाद, सम्मानजनक व्यवहार और समान अधिकारों की शिक्षा दी जाए जिससे घरेलू हिंसा की मानसिकता बचपन से ही टूट सके।
6. आगामी शोधों में बड़े न्यादर्श पर विभिन्न स्थानीयताओं, माध्यमिक शिक्षा, सामाजिक वर्ग, धार्मिक विश्वास, और मीडिया प्रभाव जैसे अन्य कारकों को भी शामिल किया जा सकता है, जिससे इस विषय को और गहराई से समझा जा सके।

अध्ययन की सीमाएं

1. प्रस्तुत अध्ययन में केवल 100 वयस्कों को सम्मिलित किया गया।
2. अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के बरेली क्षेत्र में सीमित रहा।
3. प्रस्तुत अध्ययन मे सह-संबंधात्मक विधि का उपयोग किया गया।

आभार: *लेखक उन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने अपने समय, सहयोग और समर्थन के माध्यम से इस अध्ययन में योगदान दिया। आपके शोध मार्गदर्शन, सुझावों एवं सतत सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता।*

संदर्भ:

1. Aktas, D. (2016). Attitudes of university students towards domestic violence against women. Clinical & Investigative Medicine, 39(6), 173. https://doi.org/10.25011/cim.v39i6.27523
2. Begum, S., Donta, B., Nair, S., & Prakasam, C. P. (2015). Socio demographic factors associated with domestic violence in urban slums, Mumbai, Maharashtra, India. The Indian journal of medical research, 141(6), 783–788. https://doi.org/10.4103/0971- 5916.160701
3. Bhatt, R. (1998). Domestic violence and substance abuse. *International Journal of Gynecology & Obstetrics*, *63*(S1). https://doi.org/10.1016/s0020-7292(98)00181-7
4. Bo, L., & Yating, P. (2023b). Long-Term Impact of Domestic Violence on Individuals—An Empirical Study based on Education, Health and Life Satisfaction. *Behavioral Sciences*, *13*(2), 137. https://doi.org/10.3390/bs13020137
5. Chawra, M. (2023). Modernization in Women and their Attitude towards Domestic Violence. International Journal of Indian Psychology, 11(3), 4146-4152. DIP:18.01.386.20231103, DOI:10.25215/1103.386
6. Golriz, G., & Miner, S. (2021). The effects of religion and modernization on Egyptian women's ipv attitudes. Violence Against Women, 27(14), 2552-2575.https://doi.org/10.1177/1077801220978802
7. Greene, C. A., Haisley, L., Wallace, C., & Ford, J. D. (2020). Intergenerational effects of childhood maltreatment: A systematic review of the parenting practices of adult survivors of childhood abuse, neglect, and violence. *Clinical Psychology Review*, *80*, 101891. https://doi.org/10.1016/j.cpr.2020.101891
8. Gupta, S. (2023). *Domestic abuse: types, causes, and impact*. Verywell Mind. https://www.verywellmind.com/domestic-abuse-types-causes-and-impact-5324104#citation-5 retrieved on 01 september, 2024.
9. Johnson, L., Chen, Y., Stylianou, A., & Arnold, A. (2022). Examining the impact of economic abuse on survivors of intimate partner violence: a scoping review. *BMC Public Health*, *22*(1). https://doi.org/10.1186/s12889-022-13297-4
10. Madsen, O.J. (2014). Modernity. Encyclopedia of Critical Psychology. Springer, New York, NY. https://doi.org/10.1007/978-1-4614-5583-7_190. retrieved on 13 december, 2023.
11. Ogbe, E., Harmon, S., Van Den Bergh, R., & Degomme, O. (2020). A systematic review of intimate partner violence interventions focused on improving social support and/ mental health outcomes of survivors. *PloS One*, *15*(6), e0235177. https://doi.org/10.1371/journal.pone.0235177
12. Pedersen, T. (2024). *Understanding the effects of domestic violence*. Psych Central. https://psychcentral.com/health/understanding-the-effects-of-domestic-violence retrived on 19 july, 2024.
13. Peprah, J. A. & Koomson, I. (2017). Economic Drivers of Domestic Violence among Women: A Case Study of Ghana. In I. Management Association (Ed.), *Violence and Society: Breakthroughs in Research and Practice* (pp. 222-240). IGI Global. https://doi.org/10.4018/978-1-5225-0988-2.ch013
14. Rashid, A., & Vaidya, U. (2021). Attitude towards modernization – a study of college students of district baramulla. International Journal of Scientific Research and Engineering Development, 4(2), 74-81. http://www.ijsred.com/volume4/issue2/IJSRED-V4I2P12.pdf

15. Sandeep, Rajbala, & Behmani, R. K. (.(2021An examination of domestic violence, social support, and self -esteem among women. Psychology and Education, (5)58, 7300-7306. http://psychologyandeducation.net/pae/index.php/pae/article/view/6906
16. Sarkar, M. (2010). A study on domestic violence against adult and adolescent females in a rural area of west bengal. *Indian journal of community medicine : official publication of Indian Association of Preventive & Social Medicine*, *35*(2), 311–315. https://doi.org/10.4103/0970-0218.66881
17. Wallace, L. N., & Ménard, K. S. (2016). Friendships Lost: The social Consequences of violent Victimization. *Journal of Aggression, Maltreatment & Trauma*, *26*(2), 116–136. https://doi.org/10.1080/10926771.2016.1250852
18. Yazici, H. G., Batmaz, M., & Okten, C. (2022). Awareness of and attitudes towards domestic violence in turkish society. Galician Medical Journal, 29(3), E202234. https://doi.org/10.21802/gmj.2022.3.4
19. Zakar, R., Zakar, M. Z., & Kraemer, A. (2013). Men's beliefs and attitudes toward intimate partner violence against women in pakistan. Violence Against Women, 19(2), 246-268. https://doi.org/10.1177/1077801213478028